

किसान मैं कमल तू

काया कोमल है तेरी, तू कर्दम में खेलता।
मेरे हस्त सख्त, और मैं कर्दम से खेलता।
जीवन की हर लय में, हमारा प्रभाव एक है।
किसान मैं कमल तू, हमारा स्वभाव एक है।

तू अत्तर से तेरी, अखंड लोक महकाए।
ये रोटी जो मेरी, तृष्णा दूर भगाए।
तू कीचड़ के बिस्तर में, मुझे वहाँ देखता।
मैं माटी की मेहंदी में, माँ के साथ खेलता।

जीवन की हर लय में, हमारा प्रभाव एक है।
किसान मैं कमल तू, हमारा स्वभाव एक है।
रंगों की इस भूमि पे, लोग चाहें अनेक हैं।
हमारा प्रभाव एक है, हमारा स्वभाव एक है।

थोड़ी देर में, आसमान में, अँधियारी भी छा गयी।
यूँ लहराती, वो मटकाती, बारिश बहन भी आ गयी।
तू नाचे, मैं नाचूँ, अपनी अन्न प्यास मिटाता है।
गोरैया संग गाने में, मुझे आनन्द पूरा आता है।

गरज-गरज के बरसे बादल, बिजली भी चिल्लाए।
नाच-नाच के थक गया मैं अब, गैया भी बुलाए।
धीरे-धीरे शाम हुई और, हुई मौन वो बारिश भी।
एक हाथ में लाठी ली, दूजे हाथ में चिल्लम भी।

किया प्रणाम कमल को, मैं अपने घर पे आ गया।
भोर हुई, लाठी ली, मैं फिर से वापस आ गया।
जीवन के हर चक्र में, हमारा प्रभाव एक है।
किसान मैं कमल तू, हमारा स्वभाव एक है।

Yashwant Singh Sonwaniya